शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2014

सम्पादकीय

शब्द-ब्रह्म की साधना

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

प्राचीन भारतीय विद्याओं में ब्रह्म-विद्या को श्रेष्ठ माना गया है। इस विद्या को प्राप्त करने के लिए एक मंत्र प्रसिद्ध है 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा।' आंतरिक यात्रा के साधना पथ पर अग्रसर होने वाले मनीषी के मुख से स्वस्फूर्त वाणी से उदघोष हुआ अहं ब्रह्मास्मि। जब उसकी दृष्टि बहिर्मुखी हुई तो वाक्य निःसृत हुआ तत्वम् असि। और जब पूरे ब्रह्मांड की ओर दृष्टि गयी तो कहा गया 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' अज्ञात से ज्ञात की ओर हुई इस यात्रा में 'अक्षर ब्रह्म' और 'शब्द-ब्रह्म' का निरंतर अनुसंधान हुआ। हजारों वर्षों से तत्वज्ञ प्राचीनतम ग्रंथों में उल्लेखित गूढ़तम ज्ञान का अवगाहन कर आत्मिक शांति प्राप्त करते रहे हैं। वहीं दूसरी ओर विज्ञान युग ने प्रकृति के रहस्यों को खोलने के लिए बाह्य दृष्टि रखते हुए सृष्टि के पदार्थों को 'क्या है' की प्रश्नात्मक संज्ञा दी और ज्ञात से अज्ञात की यात्रा प्रारंभ की। इस यात्रा में विज्ञान 'गॉड पार्टिकल' तक जा पहुंचा है और उसे यह विश्वास है कि वह इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय को जानकर प्रकृति को अंततः नियंत्रित कर लेगा।

आज विज्ञान उपनिषद के महावाक्य 'क्रियोपरमेवीर्यवत्तरम्' को सिद्ध कर चुका है, जिसमें कम-से-कम क्रिया में अधिक-से-अधिक परिणाम प्राप्त होता है। क्षेत्र चाहे निर्माण का हो या ध्वंस का। शब्दों की अमोघ शक्ति भी इसी दिशा की ओर इंगित करती है। विनोबा के शब्दों में समाज जीवन को बदलने और उस पर स्थायी असर डालने में उनके ही प्रयत्न सफल हुए हैं जिन्होंने या तो आध्यात्मिक तत्वों को स्थापित किया है या विज्ञान की खोज की। विज्ञान का असर दुनिया पर हमेशा हुआ है और होता रहेगा। लोकजीवन पर असर डालने वाली एक तीसरी शक्ति साहित्य की है। यह विज्ञान और आत्मज्ञान को समन्वित कर लोगों के सामने समुचित शब्दों में व्यक्त करती है। इस तरह वैज्ञानिक, आध्यात्मिक खोज करने वाले और शब्द-शक्ति में नये-नये शब्द खोजकर लोगों के चिंतन के लिए जिन लोगों ने कुछ-न-कुछ दिया है, वे ही लोग दुनिया को आकार देंगे। इसलिए हमें साहित्य की शक्ति को पहचानना चाहिए। शब्द-शक्ति की अगर हम उपासना नहीं करेंगे, हम हार खायेंगे।"

आज हमारी प्राचीन शब्द-शक्ति को अर्थघन बनाने की जिम्मेदारी साहित्यकारों पर है। आचरण से शब्दों को शक्ति मिलती है और इससे समाज जीवन परिवर्तित होता है। शब्द-ब्रह्म एसोसिएशन और महाराजा रणजीतसिंह कॉलेज आफ प्रोफेशनल साइंसेस ने 8 और 9 फरवरी को राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी आयोजित की। इसका उदघाटन देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.उमराव सिंह चौधरी ने किया। डॉ.जोगिन्दर सिंह यादव, डॉ.बी.एस.जामवाल, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.राजेंद्र मिश्र विशेष अतिथि थे। प्राचार्य डॉ.आनंद निघोजकर ने स्वागत उदबोधन दिया। डॉ.चंदा तलेरा जैन, डॉ.पद्मा सिंह,

ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

डॉ.लक्ष्मण शिंदे ने तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता की। समापन समारोह की मुख्य अतिथि इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागड की संकायाध्यक्ष डॉ.मृदुला शुक्ल थी। अध्यक्षता कॉलेज के चेयरमेन डॉ.बालकृष्ण पंजाबी ने की। उपस्थित 65 शोधार्थियों ने विभिन्न सत्रों में साहित्य की विविध विधाओं यथा कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, यात्रा, रिपोर्ताज, संस्मरण, पत्रकारिता, बाल साहित्य में शोध पत्रों का वाचन किया। शोध संगोष्ठी का उद्देश्य वाणी और शब्द के रूप में ब्रह्म-शक्ति की पहचान करना है। चिंतन की शक्ति आत्मा की गहराई में जाकर विश्व की सूक्ष्मता के प्रवेश करके जीवन के सिद्धांतों का शोध करती है। चिंतन शक्ति से समृद्ध समाज नित नयी उंचाईयों का स्पर्श करता है। राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में समाज सापेक्ष चिंतन को दिशा मिली है।, ऐसी आशा है। इस संगोष्ठी का मुख्य विषय 'साहित्यिक अनुसंधान: चुनौतियां और संभावनाएं' था। संबंधित क्षेत्र के विषय विशेषज्ञों ने अपने गंभीर चिंतन को अध्येताओं और शोधार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया। इस अंक में शोध संगोष्ठी में वाचन किये गए शोध पत्रों को दिया जा रहा है। सुधी शोधार्थियों से प्रतितोष की अपेक्षा है।